इकाई 4 सृजनात्मक एवं ज्ञान–विज्ञान के साहित्य का अनुवाद : साम्य–वैषम्य के आयाम

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 सृजनात्मक साहित्य और ज्ञान–विज्ञान का साहित्य

4.3 सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद

4.3.1 लाक्षणिकता

4.3.2 शब्दशः अनुवाद नहीं

4.4 सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद विश्लेषण आश्रित होता है

4.4.1 साहित्यिक अनुवाद और लेखकीय अभिप्राय

4.4.2 लोप और संयोजन

4.4.3 गलत अनुवाद और परीक्षण तथ्य

4.5 सृजनात्मक और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य का अनुवाद : साम्य के आयाम

4.5.1 अनुवाद–अवधारणा में निहितार्थ की समानता

4.5.2 भाषिक संरचना की समानता

4.5.3 संप्रेषणीयता की अनिवार्यता

4.5.4 शैलीगत वैविध्य को बनाए रखने की अनिवार्यता

4.5.5 पाठकीय अपेक्षाओं की कसौटी पर खरा उतरने की अनिवार्यता

4.6 सृजनात्मक और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य का अनुवाद : वैषम्य के आयाम

4.6.1 भावनात्मकता और तथ्यात्मकता के स्तर पर भिन्नता

4.6.2 सृजनात्मक एवं ज्ञानात्मक मानसिकता के स्तर पर भिन्नता

4.6.3 भाव–सुरक्षा एवं विषयगत बोध के स्तर पर भिन्नता

4.6.4 अर्थ संरचना के स्तर पर दोनों में भिन्नता

4.6.5 पारिभाषिक शबद–प्रयोग के स्तर पर दोनों में भिन्नता

4.6.6 रचनाकाल और उसके अनुवादकाल में अंतर

4.7 सारांश

4.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

4.9 उपयोगी पुस्तकें

4.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- सृजनात्मक साहित्य और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के विषय में बता सकेंगे;
- साहित्यिक अनुवाद की विशेषताओं की चर्चा कर सकेंगे;

- सृजनात्मक साहित्य और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के विषयों के अनुवाद में साम्य एवं वैषम्य के विभिन्न बिंदुओं का उल्लेख कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

एमटीटी–053 में आप भाषा प्रयुक्ति की संकल्पना का परिचय पा चुके हैं और जान गए हैं कि किस तरह भाषा के भीतर विषय क्षेत्र अथव प्रयुक्ति क्षेत्र बन जाते हैं जो शब्दावली शैली और वाक्य विन्यास के आधार पर अलग–अलग पहचाने जाते हैं। अनुवाद के संदर्भ में इन प्रयुक्ति क्षेत्रों का विशेष महत्व इस दृष्टि से होता है कि अनुवादक को प्रयुक्ति क्षेत्रों के अनुरूप भाषा अपनानी पड़ती है अन्यथा उनका अनुवाद संदर्भ सही नहीं बन पाता। प्रस्तुत इकाई में सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद के प्रमुख बिंदुओं की चर्चा के साथ–साथ ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों के अनुवाद से उसकी तुलना भी की गई है। साहित्य की भाषा जीवन के अन्य क्षेत्रों की भाषा से नितांत भिन्न नहीं होती बल्कि वह जीवन की भाषा से ही अपनी ऊर्जा ग्रहण करती है। किंतु संवेदना, भाव और विचार तीनों का समावेश करने के कारण सर्जनात्मक साहित्य की भाषा की कुछ विशेषताएँ होती हैं जो जन–जीवन की भाषा का अंग होने के साथ ही जन–जीवन की भाषा की दिशा भी प्रदान करती हैं। अर्थ का गांभीर्य, उक्ति की वक्रता और विदग्धता, कथन की नूतन भंगिमा, बिंबों, प्रतीकों के सृजनात्मक प्रयोग के कारण साहित्य का अनुवाद एक चुनौती बनकर खड़ा होता है। इन चुनौतियों का समाधान साहित्य के अनुवाद की एक बड़ी समस्या होता है। प्रस्तुत इकाई में इन पक्षों पर संक्षेप में विचार किया गया है। सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के अनुवाद की तुलना के माध्यम से अनुवादक को शब्द और शैली के समुचित प्रयोग के प्रति जागरूक होने का सुझाव दिया गया है।

4.2 सृजनात्मक साहित्य और ज्ञान–विज्ञान का साहित्य

मनुष्य के हजारों वर्षों के अर्जित और संचित मानवीय अनुभूतियों और ज्ञान–विज्ञान के विपुल वाङ्मय को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है – संवेदना प्रधान वाङ्मय और ज्ञानप्रधान वाङ्मय। पहले के अंतर्गत सृजनात्मक साहित्य आता है और दूसरे के अंतर्गत सृजनात्मक साहित्य से इतर समस्त ज्ञान का साहित्य। सृजनात्मक साहित्य के आधार तत्व हैं – अनुभूति, भाव, कल्पना आदि। दूसरी ओर, ज्ञान के साहित्य के आधार तत्व हैं तथ्य और विचार। इन दोनों श्रेणियों को क्रमशः ललित साहित्य और ज्ञानप्रधान साहित्य कहा जा सकता है। ज्ञानप्रधान साहित्य के अंतर्गत समस्त विचार, विश्लेषण, सूचना–संश्लेष और व्यवहारमूलक ज्ञान–विज्ञान शामिल है।

ज्ञान का साहित्य हमें बौद्धिक रूप से संपन्न बनाता है और सृजनात्मक साहित्य हमारी अनुभूति, हमारे भाव–विधान से साक्षात्कार कर हमारा मानसिक संस्कार करता है। इस तरह दोनों मिलकर हमें बेहतर मनुष्य बनाते हैं। अनुवाद इन दोनों ही दिशाओं में आवश्यक होता है लेकिन इनके मूल स्वरूप और सृजन प्रेरणा की भिन्नता के कारण इन दोनों विधाओं के अनुवाद की अलग–अलग जरूरतें होती हैं।

प्रस्तुत इकाई में हम सर्जनात्मक साहित्य और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के अनुवाद के संदर्भ में उनके बीच साम्य एवं वैषम्य के विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा करेंगे और यह

जानने का प्रयास करेंगे कि किस प्रकार सर्जनात्मक साहित्य और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के अनुवाद एक–दूसरे से भिन्न हैं।

4.3 सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद

अक्सर कहा जाता है कि साहित्य का अनुवाद भावानुवाद होता है शब्दानुवाद नहीं। बात एक हद तक सही भी है। साहित्यिक रचना का अनुवाद करने की प्रक्रिया में अनुवादक के सामने पहली समस्या उसकी अभिव्यंजना का सही अनुवाद करने की होती है। परंतु रचनात्मक साहित्य में एक दूसरा पक्ष उसके कलात्मक प्रभाव का होता है जो शाब्दिक अभिव्यक्ति से ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। वस्तुतः रचनाकार का लक्ष्य या प्रयोजन तो यही संवेदनात्मक प्रभाव होता है। अभिव्यक्ति इस साध्य का साधन होती है। अक्सर अनुवाद की प्रक्रिया में अभिव्यक्ति और कलात्मक प्रकार्य के बीच टकराहट होती है, विशेषकर कविता में। चाहें तो इसे सत्य और सौंदर्य के बीच संघर्ष कह सकते हैं। अनुवादक के सामने शाब्दिक अनुवाद और मुक्त अनुवाद के बीच चुनाव करने की समस्या पैदा होती है – विशेषकर कविता का अनुवाद करते समय। कहना न होगा कि आदर्श अनुवाद के लिए दूसरा विकल्प ही उत्तम होता है।

सर्जनात्मक साहित्य की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं –

4.3.1 लाक्षणिकता

साहित्य में कलात्मक प्रभाव को सिद्ध करने का महत्वपूर्ण माध्यम अभिव्यक्ति के लाक्षणिक प्रयोग होते हैं सामान्य अभिव्यक्ति और साहित्यिक अभिव्यक्ति के बीच अंतर की पहचान प्रायः इन्हीं लाक्षणिक प्रयोगों से होती है। लाक्षणिक अभिव्यक्ति का शाब्दिक अनुवाद करने पर बहुधा उसके चमत्कार/सौंदर्य नष्ट हो जाता है। ऐसी स्थिति में अनुवादक को चाहिए कि वह अपनी भाषा में किसी समानांतर अर्थ वाले प्रयोग/बिंब (यदि उपलब्ध) का प्रयोग इस बात को ध्यान में रखते हुए करे कि वह मूल के समान प्रभावी हो, अन्यथा भावनुवाद करना बेहतर होगा।

अंग्रेजी के Keep the pot boiling या wooden face का समानांतर प्रयोग हिंदी में कठिनाई से मिलेगा। ''तार टूटने न पाए'' और ''संवेदनशून्य चेहरा'' शायद निकटतम प्रयोग होगा क्योंकि हिंदी में चेहरा ''पथराया'' तो हो सकता है, पर उसकी अर्थ–व्यंजना भिन्न होती है। कभी–कभी लाक्षणिक अभिव्यक्ति का शाब्दिक अनुवाद भी संभव हो जाता है, उदाहरण : All that glitters is not gold का अनुवाद यदि ''हर दमकती चीज सोना नहीं होती'' किया जाए, तो बहुत अटपटा नहीं लगेगा। एक और उदाहरण लें : heard melodies are sweet, those unheard are sweeter का शब्दानुवाद तो एकदम बेठिकाने होगा, लेकिन हिंदी का प्रचलित मुहावरा ''दूर के ढोल सुहावने'' काफी दूर तक वही प्रभाव उत्पन्न करने में समर्थ हो सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि लाक्षणिक प्रयोगों का सरल अनुवाद करने की एकमात्र कसौटी होती है प्रभाव की समानांतरता, जिसे सिद्ध करने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं होता। प्रभाव–साम्य शाब्दिक अनुवाद, सामानांतर वैकल्पिक प्रयोग, मुक्त अनुवाद, या वर्णनात्मक टिप्पणी जैसी किसी भी युक्ति से उत्पन्न किया जा सकता है। हालांकि यदि शब्द रचना से ही यह कार्य संपन्न हो सके तो यथेष्ट होता है।

4.3.2 शब्दशः अनुवाद नहीं

साहित्यिक रचनाओं के शीर्षकों के अनुवाद में तो शब्दशः अनुवाद की गुंजाइश बहुत कम होती है। अंग्रेजी के लेखक खुशवंत सिंह ने कई साहित्यिक कृतियों का अनुवाद किया है। वे पंजाबी और उर्दू से अंग्रेजी में अनुवाद करते हैं। अनुवाद करते हुए शीर्षकों को अपनी बुद्धि से और कथ्य की माँग के अनुरूप लक्ष्य भाषा में एक नया रूप दे देते हैं। उदाहरण के रूप में पंजाबी की लेखिका अमृता प्रीतम के उपन्यास ''पिंजर'' का अनुवाद करते हुए अंग्रेजी में इसके प्रतिशब्द ''केज'' का इस्तेमाल न करके वे ''स्केलटेन'' का प्रयोग करते हैं। उसी तरह राजेंद्र सिंह बेदी का उर्दू उपन्यास ''एक चादर मैली सी'' का शीर्षक अंग्रेजी में हूबहू अनुवाद ''ए बेड कवर लुकिंग डर्टी'' के स्थान पर ''आई टेक दिस वूमेन'' अनुवाद करते हैं। रुसवा के उर्दू उपन्यास ''उमराव जान'' का अनुवाद करते हुए उसे ''कोर्टीजैन ऑफ लखनऊ'' नाम देते हैं। इसी तरह रघुवीर सहाय ने शेक्सपीयर के नाटक ''मैकबेथ'' का अनुवाद करते समय उसका नाम ''वरनम वन'' रखा है। ये सब शीर्षकों के लाक्षणिक अनुवाद के उदाहरण हैं।

साहित्यिक लेखन सृजनात्मक क्रिया है। इस सृजनात्मक क्रिया का अनुवाद कभी शब्दशः हो नहीं सकता। अगर स्रोत भाषा, भाषा एक है और लक्ष्य भाषा, भाषा दो है तो साहित्यिक अनुवाद भाषा तीन है क्योंकि दोनों भाषाओं से भिन्न साहित्यिक अनुवाद अपने एक तीसरे संसार का निर्माण करता है जिसमें लय, बिंब तथा आलंकारिकता होती है।

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा हिंदी में अनूदित माइकेल मधुसूदन के बांग्ला काव्य 'मेघनाद वध' से हम सब परिचित है। क्या इस अनुवाद का विश्लेषण और परीक्षण हिंदी की किसी मौलिक रचना के साथ किया जा सकता है? नहीं। इस अनुवाद का महत्व बांग्ला साहित्य के संदर्भ में या उसके आधार पर ही आँका जाता रहा है। अगर हिंदी अनुवाद हमें ठीक नहीं लगता है तो इसका अर्थ यह नहीं कि उसे हम मौलिक रचना का समकक्ष मानने लगें। 'मेघनाद वध' का हिंदी अनुवाद न तो हिंदी साहित्य का हिस्सा है, न यह बांग्ला साहित्य का अंश है यद्यपि एक दृष्टि से ये दोनों भाषाओं के साहित्य से संबद्ध है। दरअसल साहित्यिक अनुवाद एक तीसरे संसार का निर्माण है।

4.4 सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद विश्लेषण आश्रित होता है

जॉर्ज स्टेनर ने अपनी पुस्तक 'आफ्टर बेबल' में एक महत्वपूर्ण बात कही है कि प्रत्येक कलाकार अपने आप में एक विश्लेषण होता है। 'स्कंदगुप्त' नाटक में अभिनय करता हुआ अभिनेता स्कंदगुप्त के चरित्र का विश्लेषण करता है। विलायत खाँ राग खंमाज को सितार के तारों से विश्लेषित करते हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों की आलोचना करते हुए आलोचक प्रेमचंद की विचारदृष्टि का विश्लेषण करते है और इसी अर्थ में साहित्यिक अनुवादक स्रोत भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में उतारते हुए उसका विश्लेषण करते हैं। तात्पर्य है कि अनुवाद भी विश्लेषण होता है।

क्या इसका अर्थ यह हुआ कि एक नए सृजन के रूप में साहित्यिक अनुवाद पर विचार किया जाना चाहिए। इसका उत्तर जानने के लिए साहित्यिक अनुवाद की प्रक्रिया एवं उत्पाद के बारे में जानना ज़रूरी है।

मूल पाठ पारस्परिक भिन्न भाषिक प्रणालियों की जटिल व्यवस्था एवं मानव संस्कृति की विस्तृत व्यवस्था के द्वंद्वात्मक संबंधों पर आश्रित रहता है और उसकी इस संपूर्ण संरचना की परख किए बिना अनुवादक जब केवल अन्वयांतर पर अपना ध्यान जमाता है या किसी निर्दिष्ट उद्देश्य के साकल्य के स्थान पर किसी एक पक्ष को उभारता है तब उसके अनुवाद में परेशानी उत्पन्न होती है। आधुनिक आलोचना में जब यह कहा जाता है कि शब्द और अर्थ अविभाज्य हैं और शब्द एक विशेष संदर्भ में एक अनुपम तथा अतुलनीय अर्थ को प्रकट करता है तो उसके अन्वयांतर का प्रश्न ही नहीं उठता। अन्वयांतर समानार्थकता पर निर्भर करता है और अनुवाद स्रोत भाषा के अर्थ को लक्ष्य भाषा के अर्थ में प्रतिस्थापित करता है। अर्थ निर्णय लेखक एक अनुवादक की भाषिक एवं सांस्कृतिक प्रणालियों की द्वंद्वात्मकता पर निर्भर रहता है। एक आरेख के द्वारा इसे स्पष्ट किया जा सकता है :

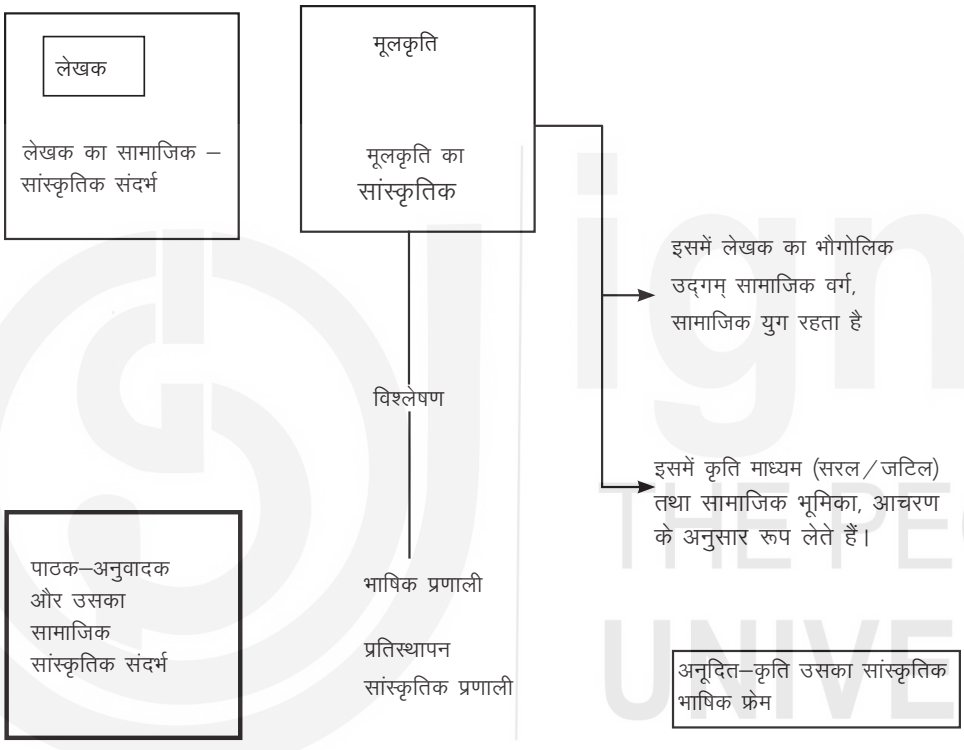

इस आरेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि अर्थग्रहण, अर्थांतरण तथा अर्थसंप्रेषण की प्रक्रिया में मूल कृति के भाषिक/सांस्कृतिक फ्रेम से परिचित होकर ही अनुवाद संभव हो पाता है परंतु इस अनुवाद में अनुवादक का ही अपना भाषिक सांस्कृतिक आयाम क्रियाशील रहता है परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि मूल अर्थ बदल जाए। दरअसल अनूदित पाठ मूल पाठ का सहपाठ बनकर आना होता है, नहीं तो अर्थ का संप्रेषण संभव नहीं हो पाता है।

स्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा की सामग्री से प्रतिस्थापन होता है। यह प्रतिस्थापन अर्थपरक बुद्धि संगत तदनुरूपता (Semantic-pragmatic equivalence) के आधार पर होता है और तभी अर्थ स्पष्ट हो पाता है तथा अनूदित कृति सहपाठ बन पाती है। इस तरह कहीं–न–कहीं अनुवाद में विश्लेषण की क्रिया जुड़ी होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि साहित्यिक अनुवाद में अनुवादक का अपना सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ काम करता है और उस युग का भी प्रभाव पड़ता है जिसमें वह रहता है और दूसरी बात स्रोत और लक्ष्य भाषा का रूप और अर्थ एक जैसा होने पर कभी समान नहीं होते और इसीलिए अनुवाद में कुछ विचलन हो जाता है।

4.4.1 साहित्यिक अनुवाद और लेखकीय अभिप्राय

साहित्यिक अनुवाद में भाषा के अभिधात्मक अर्थ के पीछे लेखक का अभिप्राय छिपा रहता है। इस अभिप्राय को समझना बहुत जरूरी होता है। विभूतिभूषण बंधोपाध्याय के प्रसिद्ध बांग्ला उपन्यास 'पाथेर पांचाली' में लेखक का अभिप्राय बिल्कुल स्पष्ट है। लेखक कहानी में कोई चरमोत्कर्ष स्थिति नहीं लाता है और उपन्यास के शीर्षक से भी यह स्पष्ट है। अंतिम पृष्ठ की प्रार्थना से भी यह तथ्य प्रकट होता है कि जिंदगी लगातार एक यात्रा है – जो किसी गाँव की सीमा में खत्म नहीं होती। जिंदगी एक रास्ते के समान है जो आपको एक स्थान से दूसरे तक, सूर्योदय को पीछे छोड़ते हुए सूर्यास्त की ओर सीमाओं को पार करते हुए अनजान की ओर ले जाता है। मगर इसके दोनों अंग्रेजी अनुवाद – टी. डब्ल्यू. क्लाक्र और तारापद मुखर्जी के द्वारा किए गए संक्षिप्त अंग्रेजी अनुवाद – मिल के इस अभिप्राय के साथ उचित न्याय नहीं करते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि यह कथा मूलतः अपु और दुर्गा की है और अपु और उसके पिता–माता के गाँव छोड़ने के साथ कथा खत्म हो जाती है। अनुवादों के अनुसार इसके बाद जो कुछ भी है वह प्रतिपराकाष्ठा (एंटी–क्लाइमेक्स) है इसीलिए उसका संक्षिप्तीकरण कर दिया जाता है। अनुवादों के द्वारा पराकाष्ठा की खोज कथा के संदेश के प्रति अन्याय करती है क्योंकि यह बंद कथा नहीं, खुली कथा है।

एक और उदाहरण लिया जा सकता है। डेविड रूबिन हिंदी उपन्यासकार प्रेमचंद के सर्वाधिक प्रामणिक अंग्रेजी अनुवादक माने जाते हैं प्रेमचंद की कहानी 'गरीब की हाय' का अनुवाद करते हुए वे उसमें से शोचनीय ढंग से कई अनुच्छेद छोड़ देते हैं और अपनी तरफ से सफाई देते हैं कि प्रेमचंद की प्रारंभिक कहानियाँ काफी उपदेशात्मक हैं, इस तरह के अनर्गल प्रसंगों से ये प्रारंभिक कहानियाँ भरी हुई हैं और उन्होंने (डेविड रूबिन) ऐसे प्रसंगों को निकाल दिया है। लेखक के अभिप्राय को नहीं समझने पर ऐसा हुआ है।

4.4.2 लोप और संयोजन

माना जाता है कि किसी भी अनुवादक को किसी भी प्रसंग को निकालने का अधिकार नहीं है। परंतु लोप और संयोजन वाले सिद्धांत की सहायता से अनुवाद में कई प्रसंग घटाए जाते हैं। साहित्यिक कृतियों के अनुवद में लोप और संयोजन की गुंजाइश रहती है, अर्थात जोड़ने और घटाने की गुंजाइश रहती है परंतु उससे यदि मूल कथ्य और अभिप्राय में बाधा आए तो उससे बचना ही ठीक है। लोप और संयोजन वाले सवाल को लेकर अनुवादक के सामने दो समीकरण होते हैं जिनमें से उसे अनुवाद कार्य के लिए एक को चुनना पड़ता है। पहला समीकण है : क – ख = मूल के अधिक निकट। यहाँ 'क' से तात्पर्य मूल कृति और 'ख' से तात्पर्य है अनुवाद करते हुए मूल के जो तत्व लोप हो जाते हैं। यह समीकरण मूल से अधिक निकट होता है। दूसरा समीकरण है : क – ख + ग = मूल से दूर। यहाँ 'ग' से तात्पर्य है अनुवाद करते हुए मूल के जो तत्व अपनी ओर से संयोजित होते हैं। साहित्यानुवाद के लिए दूसरा और तकनीकी विषयक अनुवाद के लिए पहला समीकरण अपेक्षित है। किंतु अनुवादक के लिए दूसरे समीकरण पर नियंत्रण रखने का प्रशिक्षण बहुत ही आवश्यक हैं। यह सही है कि अनुवाद में अनुवादक की मौलिक सृजन प्रेरणा काम नहीं करती इसीलिए अनुवाद–कार्य मूल, लेखन की भाँति सृजनात्मक नहीं होता। अनुवादक तो कृति के अनुरूप सृजन करता है मगर कृति में निहित विचारों को मात्र प्रस्तुत नहीं करता, उन्हें रूपांतरित करता है इसलिए अनुवाद–कार्य अनुकरणात्मक भी नहीं होता।

अनुवादक लेखक के यथार्थ के सम्मुख अपने को समर्पित करता है। अनुवाद का नया 'जेस्टाल्ट' होता है। विश्लेषणात्मक तथा कलात्मक प्रक्रिया होती है। यह प्रक्रिया अनुवादक के अनुभव, संवेदना तथा भावप्रवणता के संचित व्यवहार से संपन्न होती है।

4.4.3 गलत अनुवाद और परीक्षण तथ्य

कभी–कभी गलत अनुवादों के आधार पर साहित्यिक अनुवाद के महत्वपूर्ण परीक्षण तथ्य प्रकट होते हैं और अनुवाद के बारे में काफी कुछ पता लगता है। रवींद्रनाथ ठाकुर अपने एक बांग्ला गीत का स्वयं अनुवाद करके अंग्रेजी गीतांजलि में स्थान देते हैं। अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार है :

I ask for a moment's indulgence to
sit by thy side,
The work that I have in hand I will finish
afterwards
Away from the sight of thy face my
Heart knows no rest or respite,
And my work becomes as endless
Toil in a shoreless sea of trail.

आधुनिक काल में महाश्वेता सेनगुप्त ने अपनी ओर से बांग्ला से सीधे अंग्रेजी में और एक अनुवाद किया :

Let me sit near you only for a little while
The work I have in my hands
I will finish later,
If I do not look at your face
My heart finds no peace;
The more I plunge myself in work
I wander in a sea that has lost its shores.

अपने इस अनुवाद के आधार पर महाश्वेता यह प्रमाणित करती है कि रवींद्रनाथ ठाकुर मूल कविता की शैली ही नहीं प्रगीत के बिंबविधान और स्वर को बदल डालते हैं जिससे कि एडवर्ड युग के भाषिक काव्य शास्त्र के अनुरूप उसे छवि दे सकें। इस प्रकार, गलत अनुवादों के विश्लेषण के आधार पर मूल लेखक, उसके युग और अनुवाद और उसकी बाध्यताओं के बारे में पता लगता है।

इस तरह हम इस निश्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि अनुवाद किसी एक कृति को एक भाषिक क्षेत्र में नवीन रूप में प्रकट कर देता है भले ही मूल भाषा में वह नवीन न रही हो। इसका अर्थ यही हुआ कि साहित्यिक अनुवाद नवीकरण का एक मॉडल है – एक दूसरी संस्कृति तथा दूसरे प्रदेश में प्रतिस्थापन की एक पद्धति है। अनुवाद किसी एक कृति का दूसरी संस्कृतियों और दूसरी भाषाओं में संप्रसार का आधार है।

साहित्यिक अनुवाद एक द्विभाषिक प्रक्रिया है जो एकभाषीय संकीर्णता से हमें मुक्त करता है। सब तरह के अनुवादों में साहित्यिक अनुवाद कदाचित् सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण है क्योंकि यहाँ अनुवादक को लेखक की आंतरिक हलचल और रचना

की निःशब्दता के सार को एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रतिस्थापित करना पड़ता है। भारत जैसे बहुभाषिक देश में अनुभूति के स्तर पर एकता के प्रसार के लिए साहित्यिक अनुवाद कदाचित् एकमात्र आधार है। भारतीय संदर्भ में साहित्यिक अनुवाद भारतीय साहित्य की एकता को प्रमाणित कर पाता है और लेखक को प्रांत से राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचा देता हे।

4.5 सृजनात्मक और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य का अनुवाद : साम्य के आयाम

सृजनात्मक और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य का अनुवाद दो भिन्न दिशाओं से संबंधित होने पर भी कुछेक साम्यता के आयाम लिए हुए है। इन आयामों मे अंतर्गत स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा संबंधी बोध सहित अनुवाद की मूल अवधारणा में निहित अर्थ की दोनों प्रकार के साहित्य के स्तर पर समानता, भाषिक संरचना की समानता, संप्रेषणीयता की अनिवार्यता, शैलीगत वैविध्य को बनाए रखने की अनिवार्यता, पाठकीय अपेक्षाओं की कसौटी पर खरा उतरने की अनिवार्यता के साथ–साथ अनुवादकीय दायित्व–निर्वाह के प्रति गंभीरता की समानता प्रमुख हैं। इन आयामों का क्रमशः विवेचन इस प्रकार है :

बिंब के माध्यम से पाठक का रचनाकार की अनुभूति से साक्षात्कार : बिबों–प्रतीकों के माध्यम से साहित्य की भाषा में लाक्षणिकता और व्यंजनात्मकता पैदा होती है। यह व्यंजनात्मकता और लाक्षणिकता सृजनात्मक साहित्य में अनेकार्थता यानी अर्थ के अनेक स्तरों की सृष्टि करती हे। ज्ञान–विज्ञान का साहित्य अभिधाप्रधान होने के कारण एकार्थक होता है। यह अनेकार्थता और एकार्थता ही इन दोनों के अनुवाद में मूलभूत अंतर उत्पन्न करती है। तथ्यपरकता के कारण ज्ञानप्रधान साहित्य के अनुवाद में एकार्थता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। द्विअर्थकता अथवा अनेकार्यकता इस अनुवाद की त्रुटि होती है। लेकिन सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद यदि मूल लेखक द्वारा अभीष्ट अनेकार्थता को समाविष्ट कर सके, या कुछ तक भी ला सके तो यह उसकी बड़ी सफलता होती है। वास्तव में सृजनात्मक साहित्य के अनुवादक की तो समस्या यही रहती है कि मूल रचना का संपूर्ण अर्थ देशकाल, संस्कृति, भाषिक संदर्भ आदि के कारण अनुवाद में वहन नहीं हो पाता। यही कारण है कि सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद की प्रक्रिया अधिक जटिल होती है। विशेष रूप से कविता की बिंब–योजना कभी साहित्य विधाओं में अधिक संश्लिष्ट होती है। अपनी इसी विशेषता के कारण कविता को अनन्य उक्ति भी कहा जाता है और उसे अनुवाद से परे भी माना जाता है। लेकिन फिर भी कविता के अनुवाद प्राचीन समय से होते चले आ रहे हैं। सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद और बाइबिल के अनुवाद की पुरानी परंपरा पश्चिम में होने के कारण वहाँ अनुवाद के सिद्धांत भी आंरभ से निर्धारित किए जाते रहे हैं।

4.5.1 अनुवाद–अवधारणा में निहितार्थ की समानता

'एक भाषा में व्यक्त विचारों, भावों और संवेदनाओं को इतर भाषा में निकटतम सहज समतुल्य अभिव्यक्त करना' ही अनुवाद की मूल अवधारणा में निहित अर्थ है। यह अनुवाद–सूत्र 'आनंद के साहित्य' पर तो लागू होता ही है, साथ ही 'ज्ञान–विज्ञान के साहित्य' के अनुवाद पर भी लागू होता है। इसी आधार पर यह भी कहा जा सकता है

कि 'सर्जनात्मक साहित्य' के अनुवाद की जो आवश्यकता, महत्व, प्रासंगिकता, प्रक्रिया, पूर्वापेक्षाएँ, समस्याएँ, सीमाएँ, संभावनाएँ एवं जिन साधन–उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है वही सब कुछ ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के अनुवाद की भी पूर्वापेक्षाएँ हैं। दोनों प्रकार के अनुवादों में जहाँ हूबहू उल्था न तो किया जा सकता है और न ही संभव है, वहीं 'शब्द' और 'अर्थ' के स्तर पर भी दोनों प्रकार के अनुवादों की भाषाओं का विशेष महत्व है। और, साथ ही 'निकटतम सहज समतुल्य' का मानदंड दोनों प्रकार के अनुवादों पर समान रूप से लागू होता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि अनुवादक को दोनों प्रकार के अनुवाद में स्रोत भाषा (source language) और लक्ष्य भाषा (target language) के पर्याप्त एवं समुचित ज्ञान सहित एकसमान स्थितियों का सामना करना पड़ता है।

4.5.2 भाषिक संरचना की समानता

भाषा के संरचनात्मक घटकों अथवा भाषिक संरचना के संदर्भ में भी देखा जाए तो यह कहा जा सकता है कि सृजनात्मक साहित्य और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य की जिस भाषा में रचना की जाती है, उसका संरचनात्मक ढाँचा समान होता है। उदाहरण के तौर पर, अंग्रेजी में वाक्य संरचना सामान्यतः कर्ता+कर्म+क्रिया की क्रम–व्यवस्था पर आधारित होती है। यह क्रम–व्यवस्था अंग्रेजी में रचित सृजनात्मक साहित्य में भी देखी जा सकती है और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य में भी। दोनों प्रकार के साहित्य में अनुवादक भाषिक संरचना के वैशिष्ट्य को ध्यान में रखते हुए अनुवाद करता है। उनके अनुवाद में एकसमान वैज्ञानिक प्रक्रिया को अपनाया जाता है। इसी प्रकार, अनुवादक विरामादि चिह्नों की प्रकृति एवं स्थिति आदि का भी पूरा–पूरा ध्यान रखता है। कहने का अभिप्राय यह है कि दोनों प्रकार के अनुवादों में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के संरचनात्मक घटकों का समान ढंग से विश्लेषण किया जाता है, व्यतिरेकों को समान ढंग से पहचाना जाता है और उपयुक्त पर्यायों की तलाश की जाती है।

4.5.3 संप्रेषणीयता की अनिवार्यता

संप्रेषण, अनुवाद का प्रमुख उद्देश्य होता है। यह बात सृजनात्मक साहित्य तथा उसके अनुवाद पर भी लागू होती है और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य और उनके अनुवादों पर भी लागू होती है। संप्रेषणीयता के इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अनुवादक अनूदित सामग्री में अभिव्यक्ति की सहजता को बनाए रखता है। अभिव्यक्ति की यह सहजता दोनों प्रकार के अनुवादों में समानता को दर्शाती है। वहीं, साथ ही यह भी ध्यान में रखना जरूरी है कि अनूदित सामग्री में सहजता को लाने के लिए लेखक के मंतव्य, मूल अभिप्राय को अनुवादक द्वारा समझना भी जरूरी है ताकि वह सही पर्याय चुन सके और मूल का अनुवाद कर सके। लेखक के मूल अभिप्राय को भली प्रकार से समझने पर ही अनुवादक स्रोत भाषा पाठ को लक्ष्य भाषा पाठ में पुनःप्रस्तुत कर पाता है। और अगर अनुवादक मूल अभिप्राय को समझ नहीं पाता तो वह भूल कर जाता है। यह भूल साहित्य अनुवाद में अति–सौंदर्यवादिता (over-astheticism) के रूप में भी नजर आ सकती है और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के अनुवाद में कठिन भाषा के प्रयोग के स्तर पर।

4.5.4 शैलीगत वैविध्य को बनाए रखने की अनिवार्यता

लेखक का मूल अभिप्राय अनुवादक को अनुवाद की शैली निर्धारित करने में सहायक हो पाता है। यह शैली ही वह सब कुछ है जो रचना विशेष के कथ्य को पाठक

(अथवा श्रोता) तक पहुँचाने का कार्य करती है। हालाँकि यह स्वीकार किया जाता है कि यदि भाव सुंदर और सशक्त नहीं हैं तो शैली अर्थहीन होती है, किंतु साथ ही यह भी स्वीकार किया जाता है कि शैली की दुर्बलता के कारण रचना उतनी प्रभावपूर्ण नहीं हो पाती है। इसलिए रचना में भाव के साथ–साथ शैली का भी विशेष महत्व होता है, दोनों के बीच संतुलन होना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति की शैली भिन्न होती है। रचना को पढ़ने पर यह पता लगाया जा सकता है कि वह किसकी रचना है। दोनों प्रकार के अनुवादों में अनुवादक भाषा की शैलीपरक समस्याओं से जूझता है और अनूदित पाठ में भाव और शैली के बीच संतुलन बनाने का सार्थक प्रयास करता है। हालाँकि शैली की दृष्टि से ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के अनुवाद में कम समस्या आती है जबकि सृजनात्मक साहित्यानुवाद (और विशेष तौर पर काव्यानुवाद) में शैली के अनुवाद की कठिनाई अधिक होती है। वैसे, इसके बावजूद, दोनों प्रकार की सामग्रियों के अनुवादक के स्तर पर मूल रचना के शैलीगत वैविध्य को सुरक्षित रखने की अनिवार्यता तो होती ही है।

4.5.5 पाठकीय अपेक्षाओं की कसौटी पर खतरा उतरने की अनिवार्यता

शैली के साथ–साथ, पाठक वर्ग को ध्यान में रखना भी दोनों प्रकार की सामग्री के अनुवादकों के लिए आवश्यक होता है। अगर पाठक वर्ग छोटी आयु–वर्ग का है अथवा सामान्य शिक्षित व्यक्ति है और इस तथ्य को ध्यान में रखे बिना ही गहन–गंभीर भाषा शैली में सामग्री को अनूदित करके प्रस्तुत कर दिया जाए तो वह अनूदित पाठ पाठक वर्ग के लिए सहज–संप्रेषणीय नहीं होगा।

वैसे, देखा जाए तो पाठक वर्ग के स्तर पर भी साहित्य के इन दोनों प्रकारों में भिन्नता है। ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के पाठक वर्ग को सामान्यतः (1) विषय–विशेषज्ञ (2) आम शिक्षितजन; और (3) विद्यार्थी वर्ग के रूप में देखा जाता है। सृजनात्मक साहित्य के पाठक को आयु, शिक्षा–दीक्षा, स्वदेशी–विदेशी आदि विभिन्न आधारों पर वर्गीकृत करके देखा जा सकता है। पाठक वर्ग की भिन्नता के इस आयाम के बावजूद, मुख्य बात यह है कि सृजनात्मक साहित्य और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य का अनुवाद करते समय अनुवादक, पाठक वर्ग को अवश्य ध्यान में रखकर चलता है।

4.6 सृजनात्मक और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य का अनुवाद : वैषम्य के आयाम

यहाँ यह प्रश्न विचारणीय है कि यदि सृजनात्मक अनुवाद और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के अनुवादों में बुनियादी तौर पर समानताएँ हैं तो फिर दोनों प्रकार के अनुवादों में अंतर के आधार क्या हैं?

वैसे इस संबंध में अकाट्य तथ्य यही है कि अनुवाद के व्यावहारिक धरातल पर साहित्यिक एवं ज्ञान–विज्ञान के साहित्य साहित्य तथा उनके अनुवाद में अंतर हैं। चूँकि प्रत्येक विषय की अपनी विशिष्ट प्रकृति होती है इसी कारण प्रत्येक विषय के अनुवाद की भी विशिष्ट प्रकृति होती है, महत्व होता है, समस्याएँ–सीमाएँ होती हैं। इसी आधार पर कहा जा सकता है कि ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के अनुवाद एवं साहित्यानुवाद में स्पष्ट विभाजक रेखा खींची जा सकती है। इस विभाजक रेखा के बिंदुओं का क्रमशः विवेचन इस प्रकार है :

4.6.1 भावात्मकता और तथ्यात्मकता के स्तर पर भिन्नता

सृजनात्मक और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य में तथ्य और भाव के स्तर पर स्पष्ट रूप से भिन्नता पाई जाती है। इस अंतर का आधार यह है कि मानव–शरीर में दो प्रकार की शक्तियाँ होती हैं – मनुष्य के हृदय और उसकी आत्मा से संबंधित तथा मानव–मस्तिष्क से संबंधित शक्तियाँ। मस्तिष्क–शक्ति के विकास से मनुष्य ताक्रिक बन जाता है और परिणामतः विज्ञान की सृष्टि होती है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार 'विज्ञान वह कला है जिससे मनुष्य हर चीज को प्रमाण के साथ उसके सही रूप में समझना सीखता है। विज्ञान अतिरंजन का विरोधी और भावुकता का शत्रु है। वह मनुष्य को सत्य से दूर जाने देना नहीं चाहता।' विज्ञान के सिद्धांत तक्र की कसौटी पर परखे और वास्तविकता पर आधारित होते हैं। विज्ञान कोरे सत्य का अनुसंधान करता है। विज्ञान का केवल उन्हीं तथ्यों और विचारों में विश्वास होता है जो तक्र एवं वैज्ञानिक परीक्षणों की कसौटी पर खरे उतरते हैं। सूचना और ज्ञान प्रदान करना तथा उनमें अभिवृद्धि करते हुए एक प्रकार से 'ज्ञानवर्धन' (ज्ञान का प्रसार) करना ज्ञान–विज्ञान के साहित्य का मूल उद्देश्य होता है। ज्ञान–विज्ञान के साहित्य साहित्य में सूचनाओं, संकल्पनाओं–तथ्यों आदि के रूप में ज्ञान समाहित होता है। तथ्यों और विचारों के रूप में ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के ये आधारभूत अंग मूर्त एवं निश्चित होते हैं। ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के माध्यम से ही इन्हीं तथ्यों और विचारों का संप्रेषण किया जाता है।

जबकि सृजनात्मक साहित्य 'आनंद का साहित्य' है। हालाँकि इसमें ज्ञान भी एक अंग तो होता है, किंतु आधारभूत अंग नहीं। जीवन, साहित्य की आधारभूमि है। वैसे, साहित्यकार की रचना जीवन पर आधारित तो होती है किंतु वह कल्पना–आश्रित होती है। हालाँकि यह बात अलग है कि स्वयं कल्पना यथार्थ–आश्रित होती है अथवा यथार्थ के ज्ञान तक सीमित। भाव–कल्पना–बिंब–प्रतीक आदि सृजनात्मक साहित्य के विधायक तत्व हैं। ये विधायक तत्व सर्वथा सूक्ष्म एवं गहन व्यंजना से संपन्न होते हैं। सृजनात्मक साहित्य में अनुभूति की प्रधानता होती है। अनुभूति का स्वरूप अमूर्त होता है और साथ ही तरल भी। जिस प्रकार सूक्ष्म–तरल पदार्थ को स्थानांतरित करना स्वयं में कठिन कार्य है वही स्थिति अनुभूति के संप्रेषण की भी है। सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से आनंदोपलब्धि होती है, रसानुभूति होती है, इंद्रीय सुख मिलता है। भावनात्मक प्रभाव डालना सृजनात्मक साहित्य का लक्ष्य होता है। तथ्य और विचार का तो संप्रेषण हो सकता है, किंतु सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से भाव–कल्पना को उद्‌बुद्ध किया जा सकता है, संप्रेषण नहीं। भाव–कल्पना के अनेक स्तर और भंगिमाएँ हो सकती हैं क्योंकि वे व्यक्ति की स्थिति–परिस्थिति पर निर्भर होती हैं। साहित्यकार, पाठक के चित्त में अनुभूति को उद्‌बुद्ध करता है और पाठक, लेखक के अनुभव में साझीदार बनता है। अनुभव की यह साझीदारी मानव–चेतना में व्याप्त सहज अंत सूत्र के कारण संभव हो पाती है क्योंकि एक ही स्थिति–परिस्थिति में मानव–चित्त में समान भाव उद्‌भूत होते हैं।

साहित्यानुवादक मूल रचना में प्रस्तुत भाव–कल्पना को उसकी देश–कालपरक परिस्थिति के अनुरूप ग्रहण कर उस शब्द को चुनता है जो मूल भाव–कल्पना स्तर के निकट हो। साहित्य, विशेष तौर पर काव्य का माध्यम बिंबात्मक भाषा होती है। हिंदी साहित्यालोचना के आधार–स्तंभ आचार्य रामचंद्र शुक्ल का यह कहना है कि 'काव्य में अर्थ ग्रहण मात्र से काम नहीं चलता, बिंब–ग्रहण अपेक्षित होता है।' इसीलिए

विद्वान–मनीषियों का यह मानना है कि काव्यानुवाद नहीं किया जा सकता। और पाठक, किसी अन्य भाषा से अनूदित सृजनात्मक साहित्य के रूप में जिसे आम तौर पर ग्रहण करता है वह अनुवाद नहीं होता, 'सृजन का पुनःसृजन' अथवा 'रचना की पुनर्रचना' होती है, दूसरी रचना होती है। अनुवादक इस पुनःसृजन कर्म को रचना के भाव और शैली को जीवित रखने का दायित्व निभाते हुए संपन्न करता है। केवल भाषांतर साहित्येतर रचनाओं का तो हो सकता है, साहित्यिक रचनाओं का नहीं।

तथ्य बुद्धि का विषय हैं, जबकि भाव हृदय का। भाव सूक्ष्म होता है और तथ्य स्थूल। स्थूल का अनुवाद सरल है और सूक्ष्म का अनुवाद मुश्किल। कथ्यों या भावों के मूर्त या स्पष्ट, या स्थूल होने की स्थिति में अनुवाद उतना ही सरल है और यदि वे जितने अमूर्त या अस्पष्ट या फिर तरल हैं तो उनका अनुवाद उतना ही अधिक कठिन होगा। यहाँ स्थूलता का सीधा–सा यह अभिप्राय है कि जो जितनी सरलता से इंद्रीय–ग्राह्य है वह उतना ही स्थूल है। स्थूलता–सूक्ष्मता के इसी भेद के कारण ही तथ्य की अपेक्षा भाव कम पकड़ में आते हैं। और यह तभी संभव है जब अनुवादक इतना संवेदनशील हो कि वह मूल की भावना को पकड़ सके, उस भाव से तादात्म्य कर सके।

4.6.2 सृजनात्मकता एवं ज्ञानात्मक साहित्य मानसिकता के स्तर पर भिन्नता

सृजनात्मक साहित्य को 'आनंद का साहित्य' अथवा 'रचनात्मक साहित्य' भी कहा जाता है। इस प्रकार के साहित्य की रचना करने के लिए साहित्यकार में 'सृजनात्मकता' का होना अपरिहार्य पूर्वापेक्षा है। सृजनात्मकता, कला के रूप में अभिव्यक्ति पाती है। साहित्य को कला के विविध रूपों में ललित कला के अंतर्गत परिगणित किया जाता है। सृजनात्मकता, रचनाकार की रचना में सौंदर्य उत्पन्न करने की शक्ति है। तभी तो कहा जाता है कि साहित्यिक–कृति, साहित्यकार की सृजन–क्षमता का प्रतिबिंब होती है, रचनाकार की सृजनात्मक प्रतिभा को उद्‌घाटित करती है। सृजनात्मक साहित्य, भाव–प्रधान होता है। इसके विपरीत, ज्ञान–विज्ञान के साहित्य में तथ्यों का स्पष्ट उद्‌घाटन होता है – उसमें भाव प्रवणता का स्थान नहीं होता क्योंकि 'विज्ञान' से विशेष ज्ञान का बोध होता है। इसमें विषय अथवा तथ्य का अधिक महत्व होता है और भाव की भूमिका गौण होती है। इसलिए ज्ञान–सम्मत भावों को अभिव्यक्त करने में सृजनात्मक प्रतिभा अनिवार्य अपेक्षा नहीं है।

ज्ञान–विज्ञान का साहित्य–सृजन करने वाला ऊँचे–ऊँचे पर्वतों–पहाड़ों, हरे–भरे पेड़–पौधों, फल–फूलों से लदे वृक्षों, नदी–समुद्र, इंद्रधनुष, दिवस–रात्रि आदि प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर भावुक नहीं होगा और न ही वह उनसे उद्वेलित होकर ज्ञान–विज्ञान का साहित्य सृजित करेगा। जब आसमान पर बादल उमड़–घुमड़कर छाएँ और वर्षा की बूँदें गिराएँ तो वह यह नहीं कहेगा कि 'उमड़–घुमड़कर आते, काले–काले प्यारे बादल।' उसके लिए वर्षा का अर्थ है –'बादलों से पृथ्वी पर गिरने वाली बूँदें, जिनकी रचना वायुमंडल में उपास्थित जलवाष्प के द्रवण द्वारा होती है। जलवाष्प का यह द्रवण वायु के ऊपर उठकर ठंडी होने के परिणामस्वरूप होता है।' यही ठीक–ठीक इसके अनुवाद में भी अंतरित होता है। जबकि छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत सरीखा साहित्यकार चाँदनी से नहाती रात का सौंदर्य वर्णन करते हुए यह कह उठता है कि जिस समय घनघोर अंधकार में काले भयंकर विशालकाय बादल गर्जना करते हुए संसार पर गरजते हैं तब उस भयानक वातावरण से भयभीत होकर हवा भी गहरी लंबी साँस छोड़ती हुई प्रतीत होती है और जब बादल

उमड़–घुमड़कर मूसलाधार पानी बरसाते हैं, जब प्रखर झरती वर्षा की धारा के बीच बादलों के टकराने से बिजली कौंधती हैं, तब ऐसेा लगता है मानो बिजली की कौंध के प्रकाश में कोई मुझे बुला रहा है :

सघन मेघों का भीमाकाश
गरजता है जब तमसाकार,
दीर्घ भरता समीर निःश्वास,
प्रखर झरती जब पावस धार,
न जाने, तपक तड़ित् में कौन
मुझे इंगित करता तब मौन!

सृजनात्मक साहित्यकार में सृजनात्मक प्रतिभा की अपेक्षा और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य सृजन के लिए लेखक की ज्ञानात्मक मानसिकता रूपी पूर्वापेक्षा अनुवादकों के लिए भी अपेक्षित है। ज्ञान–विज्ञान के साहित्य का अनुवाद कार्य करने वाले अनुवादक में सृजनात्मक प्रतिभा का होना अनिवार्य अपेक्षा नहीं है। सृजनात्मक रचना के भाव–पक्ष के साथ कलात्मक सौंदर्य को लक्ष्य भाषा में पहुँचाने के आधार पर अनुवाद केवल उल्था करने की प्रक्रिया न होकर सृजनात्मक प्रक्रिया बन जाता है। और साहित्यानुवादक इस प्रक्रिया को अपनाते हुए मूल जैसा लालित्य लाता है ताकि अनुवाद सार्थक एवं सौंदर्यपूर्ण हो। इसलिए साहित्यिक अनुवाद और विशेष तौर पर काव्यानुवाद के लिए तो अनुवादक का सृजनात्मक प्रतिभा से संपन्न होना कमोबेश अनिवार्य ही माना जाता है क्योंकि कविता की बिंब–योजना साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में अधिक संश्लिष्ट होती है। अपनी इसी विशेषता के कारण कविता को अनुवाद से परे मानते हुए उसे पुनःसृजन अथवा 'अनन्य उक्ति' भी कहा जाता है।

4.6.3 भाव–सुरक्षा एवं विषयगत बोध के स्तर पर भिन्नता

किसी भी प्रकार की सामग्री का अनुवाद–कर्म करने वाले व्यक्ति को न केवल स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की अच्छी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसका दोनों भाषाओं पर अच्छा अधिकार भी होना अपेक्षित होता है। यह मानदंड जहाँ साहित्यिक अनुवाद पर लागू होता है वहीं ज्ञान–विज्ञान के साहित्य अनुवाद पर भी लागू होता है। साहित्यिक सामग्री का अनुवाद करते समय अनुवादक का कम विषय–ज्ञान अथवा अज्ञानता तथा केवल दोनों भाषाओं (अर्थात स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा) का समुचित ज्ञान ही उसके अनुवाद–कार्य में सहायक सिद्ध हो जाता है। लेकिन जहाँ तक ज्ञान–विज्ञान की सामग्री के अनुवाद का संबंध है, अनुवादक को न केवल स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की जानकारी आवश्यक है बल्कि विषय का समुचित, व्यापक ज्ञान होना परमावश्यक है। डॉ.भोलानाथ तिवारी के अनुसार, 'अभिव्यक्ति–प्रधान, शैली प्रधान या सृजनात्मक साहित्य (जैसे कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास, ललित निबंध आदि) में विषय–शैली कोई खास चीज नहीं होती। अनुवादक को यदि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का समुचित ज्ञान है तो वह अनुवाद कर लेता है। किंतु इसके विपरीत वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में विषय का ज्ञान अनिवार्यतः आवश्यक है। विषय का ज्ञान न होने से अनुवादक अनेक प्रकार की गलतियाँ कर सकता है।' (अनुवाद विज्ञान, पृ. 145)

विज्ञान–सम्मत सिद्धांतों और प्रौद्योगिकी के रूप में उनकी अनुप्रयुक्त प्रक्रियाओं के समस्त पक्षों की विस्तृत समुचित एवं व्यावहारिक जानकारी होने पर ही अनुवादक

अनूद्य सामग्री को भली–भाँति समझ सकेगा और उसे सही–सही ढंग से सरल–स्पष्ट एवं सीधी भाषा में अनुवाद करके प्रस्तुत कर सकेगा। साहित्यिक रचनाओं के अनुवाद में अनुवादक का सरोकार जहाँ विशेष रूप से भाषा की संरचना एवं रूप से होता है वहीं ज्ञान–विज्ञान विषयक सामग्री का अनुवादक अपनी दृष्टि को प्रमुख रूप से विषय–वस्तु पर केंद्रित रखता है। उसका सर्वाधिक ध्यान विषयगत सूचना की यथार्थ प्रस्तुति एवं परिशुद्धता पर केंद्रित होता है। जबकि अगर कोई दोनों भाषाओं का समुचित ज्ञाता किंतु विषय से अभिज्ञ व्यक्ति ज्ञान–विज्ञान साहित्य का अनुवाद करने का प्रयत्न करता है तो उससे वैज्ञानिक तथ्यात्मक जानकारी का भ्रामक भाषांतरण हो जाता है। अन्य शब्दों में कहा जाए तो त्रुटियाँ होने की आशंका बनी रह सकती है। उदाहरण के लिए, रसायन विज्ञान विषय से संबंधित वैज्ञानिक सामग्री में अगर **'salt'** शब्द आता है तो विषय का ज्ञान न रखने वाले अनुवादक द्वारा उसे 'नमक' समझा जा सकता है। जबकि विषय की व्यापक एवं व्यावहारिक जानकारी रखने वाले अनुवादक को यह पता है कि 'salt' वह लवण है जो 'पूर्ण अथवा आंशिक हाइड्रोजन से मुक्त अम्ल' है। जबकि 'नमक' अन्य लवणों की भांति एक लवण है और जो 'सोडियम' एवं 'क्लोरीन' का यौगिक रूप (अर्थात सोडियम क्लोराइटड) है। और ऐसी स्थिति में कभी–कभी तो बड़ी हास्यास्पद भूलें भी हो जाती हैं। जैसे यदि अनुवादक वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषय का ज्ञाता नहीं है तो विज्ञान–प्रौद्योगिकी विषयक मूल पाठ में आए **'apple'** जैसे शब्द के लिए 'सेब' शब्द का प्रयोग कर देगा जबकि विषय के ज्ञाता को यह पता होगा कि 'Apple' एक उपग्रह (satellite) का नाम है। इसी प्रकार विषय से अभिज्ञ अनुवादक 'Parents Cell' को 'माता–पिता कोशिका', 'Atomic Plant' को 'आण्विक पौधा', 'Gun metal' को 'बंदूक धातु', 'Beam of Light' को 'प्रकाश दंड' और कंप्यूटर के संदर्भ में प्रयुक्त होने वाले 'mouse' शब्द को 'चूहा' अनूदित कर सकता है।

4.6.4 अर्थ संरचना के स्तर पर दोनों में भिन्नता

सृजनात्मक साहित्य और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य की भाषा में प्रवृत्यात्मक अंतर के कारण इन दोनों प्रकार के साहित्य में अर्थ के स्तर पर भिन्नता आ जाती है। ज्ञान–विज्ञान के साहित्य की तथ्यपरकता, अर्थ के स्तर पर एकार्थता को बनाए रखती है। अर्थादेश, अर्थ विस्तार और अर्थापत्ति के रूप में भाषाविज्ञान की प्रक्रियाएँ यहाँ लागू नहीं होतीं। ज्ञान–विज्ञान के साहित्य में 'गाय' सीधेपन को नहीं व्यक्त करती, 'कुत्ता' वफादारी को नहीं दर्शाता, 'उल्लू' मूर्खता का द्योतक नहीं है और न ही व्यक्ति 'चिंताओं के सागर में डूबता है'। यही कारण है कि ज्ञान–विज्ञान के साहित्यानुवादक को अनूदित पाठ में इसी एकार्थता के प्रति विशेष ध्यान देना पड़ता है, इसे बनाए रखना पड़ता है। अगर ज्ञान–विज्ञान के साहित्य में द्वि–अर्थकता अथवा अनेकार्थता झलके तो वह अनुवाद त्रुटिपूर्ण माना जाएगा।

जबकि सृजनात्मक साहित्य की भाषा की लाक्षणिकता और व्यंजनात्मकता अर्थ के अनेक स्तरों की सृष्टि करती है, साहित्य में लालित्य गुण को बढ़ाते हुए अनेकार्थकता लाकर रचना में सौंदर्य उत्पन्न करती है। सृजनात्मक साहित्य का अनुवादक, अनुवाद में यही अनेकार्थकता लाकर मूल रचना की भांति रसात्मकता उत्पन्न करने का प्रयास करता है। अर्थ की व्यंजना और उक्तिगत सौंदर्य, वक्रता और लय उसका अभीष्ट होता है। और यही वास्तव में उसके अनुवाद–कौशल की कसौटी है कि वह मूल लेखक की अभीष्ट अनेकार्थता को किस हद तक समाविष्ट कर पाया है।

वास्तव में सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद की यह समस्या रहती है कि देश–काल, समाज–संस्कृति, भाषिक संदर्भ आदि के कारण मूल रचना का संपूर्ण अर्थ–सौंदर्य अनूदित पाठ में वहन नहीं हो पाता। इसलिए सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद की प्रक्रिया अपेक्षाकृत अधिक जटिल मानी जाती है।

4.6.5 पारिभाषिक शब्द–प्रयोग के स्तर पर दोनों में भिन्नता

ज्ञान–विज्ञान के साहित्य में तथ्य–जानकारी के रूप में विचारों की प्रधानता होती है। इन विचारों को स्पष्ट एवं यथातथ्य परिभाषित शब्दों में व्यक्त किया जाता है। यही कारण है कि ज्ञान–विज्ञान के साहित्य में पारिभाषिक शब्दों का बहुतायत प्रयोग मिलता है, जबकि सृजनात्मक साहित्य में यह प्रयोग, प्रतिशतता की दृष्टि से कम होता है। पारिभाषिक शब्द, सामान्य व्यवहार की भाषा के शब्द न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के होते हैं। इन शब्दों को विभिन्न विज्ञानों और शास्त्रों में सुनिश्चित अर्थ को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

यद्यपि सभी प्रकार के अनुवादों में पारिभाषिक शब्दावली की महत्वपूर्ण भूमिका होती है किंतु ज्ञान–विज्ञान के साहित्य में पारिभाषिक शब्दावली भरपूर इस्तेमाल करने के कारण अनुवाद में भी उनका सर्वाधिक महत्व है। इसलिए पारिभाषिक शब्दावली की दृष्टि से लक्ष्य भाषा का संपन्न होना आवश्यक है। वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी अनुवाद से संबंधित यह समस्या बहु–आयाम लिए हुए है। अपनी पारिभाषिकता के कारण ज्ञान–विज्ञान का साहित्य, साहित्यिक विषयों से भिन्नता रखते हैं। पारिभाषिक शब्दावली का अवलंब लेकर ज्ञान–विज्ञान का साहित्य सटीक अर्थाभिव्यंजक हो पाता है। ज्ञान–विज्ञान के साहित्यानुवाद के लिए लक्ष्य भाषा की पारिभाषिक शब्दावली की दृष्टि से समृद्ध–संपन्न होना आवश्यक है। चूँकि ज्ञान–विज्ञान विषयक कृतियों का अनुवाद एक ही बार किया जाता है इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि इनके अनुवाद में विशेष सावधानी बरती जाए। उदाहरण के तौर पर अंग्रेजी के 'family' शब्द को लिया जा सकता है जिससे जुड़े अनेक पारिभाषिक शब्दों के लिए हिंदी में अलग–अलग ढंग से पारिभाषिक शब्द बनाए गए हैं ताकि प्रसंगानुसार सही शब्द गढ़े अथवा चुने जा सकें और उनका सटीक अर्थ निकाल सकें :

family adjustment	:	पारिवारिक समायोजन, कौटुंबिक समायोजन
family allowance	:	परिवार भत्ता, कुटुंब भत्ता
family feast	:	कुल भोज
family head	:	कर्ता
family of nations	:	राष्ट्रकुल
family of orientation	:	जन्म परिवार, कुटुंब परिवार, प्रभव परिवार
family of procreation	:	प्रजनन परिवार, प्रजनन कुटुंब
family therapy	:	परिवारपरक चिकित्सा, कुटुंबपरक चिकित्सा
family tree	:	वंशवृक्ष

इस संबंध में यह ध्यान देना भी जरूरी है कि हर जगह पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग

किया ही जाए। जहाँ पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग अपेक्षित न हो वहाँ उनके प्रयोग से बचना चाहिए। उदाहरण के रूप में 'matter of right' का अनुवाद करते समय यहाँ प्रयुक्त 'matter' शब्द को पारिभाषिक मानते हुए अनुवाद नहीं करना चाहिए और इसका अनुवाद करना चाहिए 'अधिकार के रूप में', अथवा 'साधिकार'। इसी प्रकार, जहाँ पारिभाषिक शब्द का प्रयोग अपेक्षित हो, वहाँ अनुवादक को सामान्य शब्द के स्थान पर पारिभाषिक शब्द का ही प्रयोग करना चाहिए। दैनिक जीवन–व्यवहार में अंग्रेजी के 'salt' शब्द के लिए 'नमक' शब्द प्रचलित है। किंतु यदि 'salt' शब्द रसायनविज्ञान से संबंधित सामग्री में प्रयुक्त हुआ है तो वहाँ 'नमक' शब्द का प्रयोग न करके 'लवण' शब्द को प्रयुक्त करना होगा।

4.6.6 रचनाकाल और उनके अनुवादकाल में अंतर

ज्ञान–विज्ञान का साहित्य, और विशेष तौर पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विषयक साहित्य समकालीन होता है। इस प्रकार के साहित्य के पाठक भी कमोबेश उसी युग के होते हैं, जिस युग की मूल रचना। कहने का अभिप्राय यह है कि मूल रचना और अनुवाद के समय में युगों का अंतर नहीं होता। जबकि सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद के संबंध में यह आवश्यक नहीं कि वह समकालीन साहित्य का ही हो। समकालीन सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद भी हो सकता है और युगों का अंतर रखने वाली साहित्यिक रचनाओं का भी। यानी, मूल रचना और अनूदित रचना एक ही समय की भी हो सकती है (जैसे, गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के जीवनकाल के दौरान ही हुए 'गीतांजलि' के अनुवाद) तथा मूल और अनूदित रचना के समय में तुलसीदास और बारान्निकोव के काल जैसा, शेक्सपियर और रांगेय राघव के काल जैसा, उमर खैयाम और फिट्जेराल्ड/बच्चन के काल जैसा युगों का अंतर भी हो सकता है।

रचनाकाल और अनुवादकाल के इसी अंतर के आधार पर यह भी कहा जाता है कि जिस देश और जिस काल में मूल सृजनात्मक साहित्य की रचना की गई होगी, उस देश–काल की संस्कृति–सभ्यता, रीति–रिवाज तथा साहित्यिक रूढ़ियों आदि की पूरी जानकारी सृजनात्मक साहित्यानुवादक को होनी चाहिए क्योंकि लेखक की मानसिक बुनावट या उसकी अपनी शिक्षा, परिवेश और आसपास के जीवन से प्राप्त अनुभवों एवं जीवन के प्रति उसकी दृष्टि का प्रभाव होता है जिसे अनुवादक को समझना होता है। अपनी इसी समझ और जानकारी के आधार पर अनूदित पाठ में मूल धरती की गंध का आभास होगा, अनूदित पाठ में गहनता, प्रामाणिकता और यथातथ्यता के गुण को स्थान प्राप्त होगा।

4.7 सारांश

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप जान गए होंगे कि सृजनात्मक साहित्य क्या होता है और ज्ञानप्रधान साहित्य से वह किस प्रकार भिन्न है। लाक्षणिकता सृजनात्मक साहित्य की विशेषता होती है अतः यहाँ शब्दशः अनुवाद से काम नहीं चलता हे। इसमें लेखकीय अभिप्राय को समझते हुए पुनःसृजन करना होता है। वहीं, ज्ञानप्रधान साहित्य वस्तुतः अभिधात्मक होता है जिसका अधिकांशतः शब्दानुवाद किया जाता है। सृजनात्मक साहित्य की विभिन्न विधाओं के अनुवाद के विषय में भी आपने इस इकाई में जानकारी हासिल की है। आपको मालूम हो गया है कि इसमें सांस्कृतिक संदर्भ किस तरह महत्वपूर्ण होते हैं।

सृजनात्मक साहित्य और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य की मूलभूत विशेषताएँ इनके अनुवादों को भी प्रभावित करती है। इसलिए दोनों तरह के अनुवादों में बुनियादी समानता के बावजूद बहुत अंतर होता है। यह अंतर किन आधारों पर और कैसा होता है, इसकी जानकारी भी आपने इस इकाई में प्राप्त की है।

4.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

- संवेदना प्रधान वाङ्मय और ज्ञान प्रधान वाङ्मय के विषय में पाँच पंक्तियाँ लिखिए :
- लाक्षणिक अभिव्यक्ति का शाब्दिक अनुवाद क्यों नहीं किया जाना चाहिए? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।
- सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में कुछ जोड़ने और कुछ घटाने की गुंजाइश किस प्रकार रहती है?
- ज्ञानप्रधान साहित्य के अनुवाद में किन–किन सावधानियों की आवश्यकता है?
- सर्जनात्मक साहित्य तथा ज्ञानप्रधान साहित्य के अनुवाद में साम्यता के बिंदुओं की चर्चा कीजिए।
- सर्जनात्मक साहित्य तथा ज्ञानप्रधान साहित्य के अनुवाद में वैषम्य के बिंदुओं की चर्चा कीजिए।

4.9 उपयोगी पुस्तकें

- तिवारी, प्रो. नित्यानंद, साहित्य का स्वरूप, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधन और प्रशिक्षण विद्यापीठः प्रथम संस्करण 1985
- वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2017
- Venuti, Lawrence(edited): The Translation Studies Reader, Routledge, London and Newyork; First published 2000
- Baker, Mona and Saldanha, Gabriela (edited) : Routledge Encyclopedia of Translation Studies, 2nd edition; Routledge, London and Newyork; 2009

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY